# विजयादशमी महोत्सव

**प्रास्ताविक**

अपनी परम्परा में आश्विन शुक्ल दशमी अक्षय स्फूर्ति का एक दिवस है। दैवी तथा दानवी प्रवृत्ति में संघर्ष तथा दैवी प्रवृत्ति द्वारा दानवी प्रवृत्ति पर प्राप्त विजय की, अनादि काल से अनेक घटनाओं द्वारा संजीवित किया गया यह दिव्योज्ज्वल प्रतीक है, इसीलिये किसी भी शुभ सात्विक तथा राष्ट्र-गौरवकारी कार्य को प्रारम्भ करने के लिये यह मुहूर्त सर्वोत्तम माना गया है। विजय की अदम्य प्रेरणा इसके द्वारा उत्पन्न होती हैं सर्व दिव्य गुणों की समवायरुप दुर्गा देवी ने इसी दिन आसुरी सामर्थ्य पर विजय प्राप्त की थी। सभी मानवी मूल्यों को कुचलकर, सद्‌गुण व सद्‌प्रवृति को स्थान न देने वाले उन्मत्त रावण को इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु रामचन्द्र ने रक्त स्नान कराया था तथा तेतीस कोटि देवताओं को मुक्त किया था। रामलीला तथा दुर्गापूजा- इन दोनों उत्सवों को इस विजयशाली इतिहास की पावन स्मृति लोक-मानस में बनाये रखने की दृष्टि से ही मनाया जाता है। विजयशाली उत्सव ही प्रत्यक्ष शक्ति का, सामर्थ्य का पूजन है।

विजयादशमी पर शक्ति पूजन के साथ ही शमी-पूजन भी किया जाता है। रघुराज के समान श्रेष्ठदाता तथा कौत्स के समान निर्लोभी याचक की स्मृति भारतीय समाज के आदर्श का चित्र प्रस्तुत करती है।

"कुबेर द्वारा की गई स्वर्ण वृष्टि आप ही के लिये है तथा इस अपार स्वर्ण के स्वामी आप ही हैं।" यह विनती करने वाले रघुराज तथा गुरुदक्षिणा के लिये आवश्यक सोना ही लेकर शेष समाज को अर्पण करने वाले कौत्स के समान आदर्श उत्पन्न करने वाली समाज-रचना भारत के सिवाय उन्यत्र कहाँ निमार्ण हुई है।

इस दिन शस्त्रपूजन की भी परम्परा हैं बारह वर्ष के वनवास तथा एक वर्ष के अज्ञातवास के पश्चात् पाण्डवों ने अपने शस्त्रों का पूजन इसी दिन किया था और

उन्हें पुनः धारण किया था। पाण्डवों ने अज्ञातवास-काल में अपने इन शस्त्रों को शमीवृक्ष पर ही छिपाकर रखा था।

निकटतम भूतकाल में ही विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी हिन्दुत्व का स्वाभिमान लेकर हिन्दू पद-पादशाही की स्थापना करने वाले छत्रपति शिवाजी द्वारा सीमोल्लंघन की परम्परा का प्रारम्भ इसी दिन से हुआ था।

राष्ट्र-जीवन में शक्ति का निर्माण करने के लिए संकल्पित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य इसी दिन के शुभ मुहूर्त से प्रारम्भ हुआ था। प.पू. आद्य सरसंघचालक डॉ. हेडगेवारजी ने नागपुर के मोहिते बाड़े में आश्विन शुक्ल दशमी संवत १९८२ तदनुसार २७ सितम्बर १९२५ ई. में संघ कार्य की स्थापना की। पतित, पराभूत, आत्म विस्मृत तथा आत्मविश्वास शून्य हिन्दू-राष्ट्र में नव चैतन्य आत्म विश्वास एवं विजय की आकांक्षा निर्माण कर, उसकी सिद्धि के लिये शक्ति की उपासना करने के लिये उसे प्रवृत्त करने के निमित्त यह उत्सव एक परम्परा प्राप्त साधन ही है।

उद्देश्य की पूर्ति हेतु संघ शक्ति संचय में लगा है। यह शक्ति आज देश में फैली, प्रभात, प्रौढ़, सायं व रात्रि शाखाओं तथा विश्व हिन्दू परिषद्, विद्यार्थी परिषद्, भारतीय मजदूर संघ, वनवासी कल्याण आश्रम, भारतीय किसान संघ, विद्याभारती, सेवाभारती आदि के रूप में प्रकट हो रही है।

पाशविक और आसुरी शक्ति की उपासना, संघ का मंतव्य नहीं। अन्यायी, अत्याचारी तो घबरायें किन्तु सज्जन संवर्द्धन पायें संघ ऐसी शक्ति चाहता है। कोरी अहिंसा नहीं सुहाती। शक्ति के सम्बल से ही अहिंसा जीवित रह सकती है।

वर्तमान परिस्थितियों में हिन्दू समाज की संगठित शक्ति ही सभी समस्याओं का एक अचूक निदान है।

# विजयादशमी महोत्सव

आज विजयादशमी का पर्व है। इस पवित्र पर्व के दिन मैं आप सबका हार्दिक स्वागत करता हूँ। हिन्दुओं के सांस्कृतिक इतिहास में विजयादशमी का बड़ा महत्त्व है। क्योंकि यह विजय का दिन है। यह विजय न किसी एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति पर और न ही किसी देश की दूसरे देश पर विजय हैं अपितु यह धर्म की अधर्म पर, नीति की अनीति पर और न्याय की अन्याय पर विजय है। इसी विजय का प्रतीक रुप अपना यह विजयादशमी महोत्सव है अपने संघ की दृष्टि से तो इस दिन का एक और भी विशेष महत्त्व है। इसी पवित्र दिन प. पू. डॉक्टर हेडगेवार जी ने अपने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। १९२५ से आज तक की कालावधि में आज की भाँति अनेक विजयादशमी महोत्सव सम्पन्न हुए हैं। और उस हर प्रसंग पर श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा संघ के मूल विचारों का प्रतिपादन किया जाता रहा है अतः इससे कोई भिन्न विचार आज यहां व्यक्त किये जाएंगे, ऐसी कोई बात नहीं। संघ का मूलभूत विचार जो १९२५ में संघ की स्थापना के समय प्रतिपादित किया गया, उसमें कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ है।

हम जरा चारों ओर दृष्टि दौड़ाएँ तो हमें यही दिखाई देगा कि लोग हर दस-बीस वर्षों में अपने ध्येय व नारे बदलते रहे हैं। एक बार एक महात्मा ने ''रामराज्य'' की घोषणा की और जनसामान्य के अन्तःकरण को स्पर्श किया- जनमानस उस घोषणा से अत्यंत उत्साहित हो उठा; किन्तु उस महात्मा के जाते ही उनकी वह घोषण भी पीछे रह गयी- या यों कहें कि जानबूझकर पीछे धकेल दी गयी। उसके स्थान पर ''लोक कल्याणकारी राज्य'' की घोषणा की जाने लगी। मानो रामराज्य में लोककल्याण की कल्पना नहीं की जाती। '' लोक कल्याणकारी राज्य'' की यह घोषणा भी अधिक काल तक नहीं टिक पायी। उसकी बजाय ''समाजवादी पद्धति की समाजरचना'' (Socialistic Pattern of Society) की घोषणा की

जाने लगी- किन्तु यह घोषणा भी अल्पजीवी सिद्ध हुई। तुरंन्त उसके स्थान पर "लोकतंत्रात्मक समाजवाद" (Democratic Socialism) का उद्घोष हुआ। इन उद्घोषों के अनुरूप व्यवहार और आचरण हुआ हो, ऐसी बात भी नहीं। किन्तु वह एक अलग विषय है। संघ के ध्येय में, १९२५ से आज तक के वर्षों में यत्किंचित भी परिवर्तन नहीं हुआ है। इसका कारण एक बार जो स्वीकृत कर लिया या मान लिया, उसे ही पकड़े रहने का दुराग्रह नहीं और न किसी प्रकार का अड़ियल-हठ ही है-बल्कि उसका कारण है, उसकी शाश्वत सत्यता के साथ ही उसकी कालोचित उपयुक्तता और आवश्यकता।

१९२५ से संघ यही बात बताते आया है कि यह एक राष्ट्र है। यह हिन्दू राष्ट्र है-इस राष्ट्र का निर्माण और संवर्धन हिन्दू समाज ही करता आया हैं। इस राष्ट्र का भाग्य और भविष्य हिन्दू समाज के भाग्य और भविष्य से जुड़ा है। इसलिये हिन्दू समाज सुसंगठित, एकात्म और राष्ट्रीय सद्गुणों से सम्पन्न होना चाहिए- हिन्दू समाज जब ऐसा बनेगा तभी अपना यह राष्ट्र भी एकात्म, सुसंगठित, और सुसंस्कारित रहेगा। यही ध्येय सामने रखकर संघ आरम्भ से ही कार्यरत है।

"हिन्दू राष्ट्र, "हिन्दू संगठन"- ऐसे शब्द सुनते ही कुछ लोगों की त्येरियाँ चढ़ जाती हैं। उनके मन में सवाल उठता है, कि फिर इस देश के अहिन्दुओं का क्या होगा? वे क्या सोचेंगे? विशेष रुप से दिखाई तो यही देता है कि यह प्रश्न गैर-हिन्दुओं की बजाय हिन्दुओं को ही अधिक सताता है। हमारे देश में अनेक धर्म-सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। इनमें से किसी को भी अपने मन में यह भय रखने का कोई कारण अथवा स्थिति नहीं है कि उसके धर्म या सम्प्रदाय के अस्तित्व को कोई खतरा हो।

हमारे यहाँ पारसी लोगों की संख्या कितनी कम है, फिर भी उन्हें यहाँ कोई भय नहीं सताता। हिन्दुओं और पारसियों के बीच दंगे होने की बात कभी किसी ने सुनी भी नहीं है। ईसाई धर्म के लोग भी यहाँ रहते हैं- उनके भी विविध सम्प्रदाय हैं। वे सभी यहाँ रहते हैं। उनके कुछ मिशनरी विदेशी पैसों के बल पर अपने देश के अशिक्षित, पिछड़े-गरीबलोगों के अज्ञान और गरीबी का लाभ उठाकर जब उनका

धर्मान्तरण करते हैं और उन्हें परम्परागत मूल से तोड़ने का प्रयास करते हैं तब उसकी प्रतिक्रिया के रूप में मिशनरी-गतिविधियों का विरोध होता दिखाई देता है। कहीं तनाव की स्थिति भी पैदा होती है किन्तु फिर भी उसे हिन्दु- ईसाई दंगों का स्वरूप कभी प्राप्त नहीं होता पर यहाँ हिन्दू-मुस्लिम दंगे हमेशा होते आये हैं। पारसियों की संख्या इस देश में इतनी कम है कि अगर हिन्दू सोचें, तो उनके धर्म का नामोनिशान तक हिन्दुस्तान में नहीं टिक पायेगा। उनकी जन्म-भूमि पर्शिया में उन पर जो बीती उनके साथ जो कुछ हुआ, वह यहाँ भी होना कोई कठिन बात नहीं थी। किन्तु हिन्दुओं का यह स्वभाव नहीं। पारसी समाज के लोगों को हिन्दुओं से किसी भी प्रकार का भय अथवा डर नहीं लगता। ईसाईयों की संख्या उनसे कहीं अधिक है। फिर भी वे भी यहाँ कोई आतंकित मानसिकता में जीने को विवश है, ऐसा दिखाई नहीं देता। मुसलमानों की संख्या तो उनसे कई गुना अधिक है, फिर भी कहा जाता है, कि उन्हें हिन्दुओं से भय लगता हैं एक तो यह भय कृत्रिम अथवा झूंठा होना चाहिए, या फिर मुसलमानों को शायद यह भय सता रहा हो कि उनके पूर्वजों ने यहाँ जो अत्याचार और विध्वंस किये, हिन्दू उनसे इसका बदला लेंगे। किन्तु इस प्रकार का बदला लेना हिन्दुओं के रक्त में नहीं है और न ही उनका यह स्वभाव है। हिन्दूधर्म और संस्कृति भी नहीं सिखाती। अगर ऐसी कोई बात होती तो पाकिस्तान को जिस तरह हिन्दू-विहीन बना दिया गया है, हिन्दुस्तान भी मुसलमान विहीन बना दिया जाता। किन्तु ऐसा नहीं हुआ- यही हिन्दुओं की सहिष्णुता और सर्वधर्म समभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

हिन्दूसमाज को विशेषरूप से आजकल साम्प्रदायिक कहने का रिवाज सा चल पड़ा है। हम सभी को यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि जो कार्य अथवा विधि सम्पूर्ण हिन्दू समाज को स्पर्श करती है, वह कार्य कदापि साम्प्रदायिक नहीं हो सकता। क्योंकि हिन्दू यह कोई सम्प्रदाय नहीं सभी सम्प्रदायों, सभी श्रद्धा-विश्वासों, सभी उपासना पद्धतियों और सभी पंथों के प्रति समानता का व्यवहार और सबके प्रति आदर भाव रखनेवाला यह हिन्दू राष्ट्र है। जो लोग हिन्दुत्व को केवल एक साम्प्रदायिक भावना, कुछ विशिष्ट प्रकार की उपासना, कुछ कर्मकाण्ड, कुछ पर्व-

उत्सव मात्र मानते हैं, वे हिन्दुत्व की राष्ट्रीय भूमिका को तो भूलते ही हैं, किन्तु हिन्दुत्व की अखिल मानवकल्याणकारी वैश्विक भूमिका की ओर भी ध्यान नहीं देते। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि व्यक्ति यानी केवल शरीर मात्र नहीं, शरीर के साथ ही उसमें मन, बुद्धि और आत्मा भी होती है। इन्ही चार स्तरों पर वह नित्य के क्रियाकलाप करता है। इसीलिये जब हम मानव के सुख का विचार करते हैं तो हमें उसके समग्र अस्तित्व का विचार करना चाहिए। हिन्दू तत्वज्ञान और दर्शन में इसका विचार किया गया है। केवल मानव ही नहीं, तो वह मानव, जिस विश्व का घटक है- उस सम्पूर्ण विश्व के हित का चिंतन भी उसमें किया जाता है। वह विश्व में मानव जिस तरह व्यक्तिरूप में है, उसी तरह वह समाज रूप में भी विद्यमान है। इसी प्रकार यहाँ एक मानवेतर सृष्टि भी अस्तित्व में है। इस सभी में एक चैतन्य तत्व भी भरा हुआ है सम्पूर्ण विश्व का विचार यानी मानव, मानव समाज, मानवेतर सृष्टि और चराचरों में विद्यमान चैतन्य, इन सभी का समग्रता में चिन्तन करना है। इन सभी में व्याप्त विविधताओं को ध्यान में रखकर उनमें सामंजस्य साधा जा सकता है। सामंजस्य प्रस्थापित करने वाले तत्त्व को ही हमारे यहाँ धर्म कहा गया है। ''धर्म'' इन सभी को परस्पर जोड़ता है और उनकी धारणा करता है। इसी अर्थ में हमारा यह हिन्दू धर्म है- इसीलिये वह सम्प्रदाय नहीं है। धर्म का सम्बन्ध केवल अलौकिक और परमार्थ से ही नहीं, उसका सम्बन्ध भौतिक और ऐहिक से भी है। इसलिये हमारे यहाँ यह माना गया है- ''यतोभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि स धर्मः''। मानव के सुख का, हित का और उन्नति का विचार करना आवश्यक है। हिन्दुत्व ही इसका विचार करता है यही विचार सम्पूर्ण जगत में सामंजस्य और शान्ति निर्माण कर सकता है यही विचार मनुष्य को स्वार्थी, राक्षस बनने से बचा सकता है।

बलशाली राक्षस रावण पर भगवान् रामचन्द्र जी ने विजय पाई थी। उसके उपलक्ष में विजयादशमी का महोत्सव मनाया जाता है। रावण एक महा पराक्रमी, महाबलशाली राक्षस था। संसार को पीड़ा देने वाले नवग्रह, बड़े-बड़े राजा महाराजा, वीर पुरुष और देवता भी रावण से डरते थे। सारी भौतिक संहारक शक्ति उसके पास

थी, पर आखिर उसे किसने हराया? लोग जिन्हें जंगली कहते हैं, जिनके पास सिवाय पेड़ों पत्थरों के कुछ भी अस्त्र-शस्त्र नहीं थे, ऐसे बानरों को संगठित कर उन्हीं के द्वारा प्रभु रामचन्द्रजी ने रावण को हराया। रावण की भौतिक शक्ति इस संगठित शक्ति का मुकाबला नहीं कर सकी। नाश रावण का हुआ, भारतीय समाज, धर्म और सभ्यता का नहीं। श्रद्धा, आशा और उत्साहभरा संगठित बल यदि हम देश में निर्माण करें तो सारे संकटों को हँसते-खेलते ठुकरा सकेंगे। यही विजयादशमी का संदेश है।

विजयादशमी का यह पर्व सीमोल्लंघन का भी पर्व है। आज के इस पर्व पर हम सभी हिन्दुओं को पुरानी कालबाह्य रूढ़ियाँ समाप्त करने के लिए मानसिक सीमोल्लंघन करने का दृढ़ निश्चय करना चाहिए। हिन्दू समाज एक सभ्य, उदार, निर्भयी और पराक्रमी समाज है- यही प्रतिमा सर्वत्र जनमानस में अंकित होनी चाहिए। सभ्यता, उदारता, निर्भयता और पराक्रम आदि गुण समूहों से युक्त हिन्दू समाज ही हिन्दुत्व के मानवकल्याणकारी तत्वज्ञान को संभाल सकेगा। ऐसा समाज ही सज्जनों में अभय की भावना और दुर्जनों में अपनी धाक निर्माण कर सकेगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने १९२५ में ही ऐसे समाज के निर्माण का लक्ष्य सामने रखकर जन्म लिया है इसी ध्येय को अपने अन्तःकरण में निरंतर जागृत रखते हुये संघ के कार्यकर्त्ता अब समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में कार्यरत है। समाज के प्रति आत्यंतिक आत्मीयता, स्वार्थनिरपेक्षता, परिश्रम और साहस के साथ कार्य करने के कारण ही वे उन सभी क्षेत्रों में अपना विशेष प्रभाव पैदा कर सके हैं राष्ट्र-निर्माण के तथा अपने उदात्त तत्वज्ञान को व्यवहार में चरितार्थ करने के, संघ के इन प्रयासें में आप सभी का सक्रिय सहयोग मिले, यही मेरी आप सबसे विनम्र प्रार्थना है।